

संपादकीय आसमानी साहस

यह कल्पना करना भी कठिन होता है कि सैकड़ों यात्रियों की सुरक्षा के लिये जवाबदेह किसी हवाई जहाज का कोई को-पायलट अपने कैप्टन पर हमला करके जहाज को क़ैश कराने की साजिश करेगा। यहां तक कि पायलटों को ट्रेनिंग में भी इस तरह की अप्रत्याशित चुनौती पर चर्चा नहीं होती, क्योंकि यह विश्वास ही नहीं किया जा सकता कि कोई पायलट अपने पेशे से ग़दारी कर ऐसा कृत्य कर सकता है। कभी आसमान में जब ऐसा अप्रत्याशित घटे। फिर गंभीर रूप से घायल कैप्टन हमलावार साथी पायलट के घातक हमलों से जूझता हुआ, बेहद मुश्किल हालात में कॉकपिट खोल दे। फिर यात्रियों व क्रू-मैम्बर्स को मदद के लिये आवाज दे। तो वास्तव में वह कैप्टन हमारी हकीकत की ज़िंदगी के हीरो से भी बहकर महानायक सरीखा ही है। फ़लाई दुबई के हवाई जहाज में कैप्टन स्मित मच्छार के ऐसे ही साहस से भयानक साजिश के चलते अचानक हजारों फीट नीचे गिरते जहाज को नियंत्रण में लाया जा सका। उनके साहस से हवाई जहाज में सवार 174 यात्रियों की जान बचायी जा सकी है। आज स्मित के साहस की दुनिया तारीफ कर रही है। हमेशा भारतीयों को लेकर असहज टिप्पणियां करने वाले अमेरिकी राष्ट्रपति ने स्मित के साहस की सार्वजनिक रूप से तारीफ की है। इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने इस हीरो की तारीफ करते हुए कहा है कि एक हिंदुस्तानी ने एक दूसरा 9/11 होने से बचा लिया है। भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी भारत का गौरव बढ़ाने वाले स्मित मच्छार के साहस की मुक्तकंठ से प्रशंसा की है। निस्संदेह, स्मित व हवाई जहाज में साहस दिखाकर विमान की सऊदी अरब में सुरक्षित लैंडिंग कराने वाले सहयोगी यात्री अभिनंदन के काबिल हैं। दुबई से तेल अवीव का रही फलाई दुबई की फ्लाइट्स की सुरक्षित लैंडिंग का घटना अप्रत्याशित और रोंगटे खड़े करने वाली है। इस्राइली यात्री यानीव हायुन भी बड़ी त्रासदी टालने वाले साहसी यात्रियों में शामिल थे। इस हवाई जहाज के इस्राइल में उतरने पर इस्राइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने हवाई अड्डे पहुंचकर इस साहसी यात्री की पीठ थपथपायी।

बहरहाल, स्मित मच्छार द्वारा समय पर दिखाए गए अदम्य साहस ने एक बड़ी हवाई त्रासदी को टाल दिया। निश्चित रूप से आने वाले समय में जांच के बाद कई अहम सवालों के जवाब मिल पाएंगे। सवाल है कि आखिर विमान का को-पायलट जहाज को क्यों क़ैश कराना चाहता था? क्या इसके पीछे कोई आत्मघाती विचारधारा काम कर रही थी या ये कोई बड़ी आतंकी साजिश थी? क्या ये को-पायलट के कट्टरपंथ की ओर रक्षान, या फिर मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्या की परिणति थी? वैसे साजिश में ईरान के शामिल होने के दावों की अभी पुष्टि नहीं हुई है। समय की मांग है कि सऊदी अरब, यूएई और इस्राइल आदि देशों के जांचकर्ताओं को असंलियत का पता लगाना चाहिए। बहरहाल, इस्राइल पर हमला के घातक हमले की तीसरी बरसी से कुछ दिन पहले हुई इस भयावह घटना ने दुनियाभर में हवाई यात्रा की सुरक्षा से जुड़े सवालों पर सबका ध्यान खींचा है। इस घटनाक्रम के कई अनुत्तरित सवाल लोगों को परेशान कर रहे हैं कि को-पायलट को प्राणघातक हथियार कैसे मिला? क्या हवाई जहाज के उड़ान भरने से पहले कॉकपिट सुरक्षा के मौजूदा नियमों का पूरी तरह से पालन किया गया था? घटनाक्रम के आलाोक में एविएशन प्रोटोकॉल की पारदर्शी जांच भी जरूरी है। इस घटना का मानवीय पहलू यह है कि कैप्टन, यात्रियों व क्रू मैम्बर्स ने बेहद चुनौतीपूर्ण हालात में विमान को आकाश में बनाये रखा। बेहद जटिल स्थिति में तत्काल समयानुकूल निर्णय लेने के लिये उनके हिम्मती कदम बेहद सम्मान व तारीफ के काबिल हैं। जिसके चलते स्मित मच्छार को आज इस्राइल में एक बड़े हीरो की तरह देखा जा रहा है। मौत के मुंह से निकलकर आये यात्री सोशल मीडिया पर उनका गुणगान करते नहीं थक रहे हैं। इतना ही नहीं, एक भारतीय के अदम्य साहस के लिये इस्राइल में भारत को भी धन्यवाद दिया जा रहा है। बहरहाल, व्यापक नज़रिये से देखें तो इस घटनाक्रम के बाद एविएशन अधिकारियों की जिम्मेदारी बनती है कि वे भविष्य में ऐसे घटनाक्रम की पुनरावृत्ति रोकने के लिये चाक-चौबंद सुरक्षा उपाय अपनाएँ।

अभियान

सनातन परंपरा में देवी-देवताओं का स्वरूप केवल पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं है। प्रत्येक देवी-देवता के पीछे किसी न किसी गहरे आध्यात्मिक सिद्धांत, शक्ति और चेतना की कल्पना की गई है। इसी परंपरा में मां गायत्री का स्थान अत्यंत विशिष्ट माना जाता है। उन्हें जान, विवेक, चेतना, तप, आध्यात्मिक प्रकाश और सबुद्धि की अधिष्ठात्री शक्ति के रूप में पूजा जाता है। मां गायत्री को वेदमाता भी कहा जाता है और गायत्री मंत्र को सनातन परंपरा के सबसे पवित्र एवं प्रभावशाली मंत्रों में स्थान प्राप्त है। मां गायत्री के प्राकट्य की कथा भी सामान्य देवी-देवताओं की जन्मकथाओं से अलग है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार उनका प्राकट्य किसी सामान्य घटना का परिणाम नहीं, बल्कि सृष्टि के संचालन और चेतना के विस्तार के लिए आवश्यक दिव्य शक्ति के रूप में हुआ था। सृष्टि की रचना का दायित्व भगवान ब्रह्मा को सौंपा गया। ब्रह्मा को सृष्टि का रचनाकार माना गया है, लेकिन केवल रचना का संकल्प पर्याप्त नहीं था। सृष्टि के निर्माण के लिए ज्ञान, चेतना, शक्ति, लय, नियम और व्यवस्था की आवश्यकता थी। धार्मिक मान्यताओं में इसी आवश्यकता से उस दिव्य शक्ति

दुनिया में फिर किताबों की ओर लौटने की मुहिम

ब्रिटेन की एक प्रोफेसर बारबरा सहाकियन ने अमेरिका के दस हजार बच्चों पर एक शोध किया। शोध के निष्कर्ष के तौर पर बारबरा ने बताया कि जो बच्चे छुटपन से ही शौक के लिए पढ़ने लगते हैं, बड़े होकर उन्हें दूसरों से बातचीत करने, जुड़ने और जीवन में आगे बढ़ने में बहुत सहायता मिली। उनका स्क्रीन टाइम भी कम हुआ।

प्रेरणा

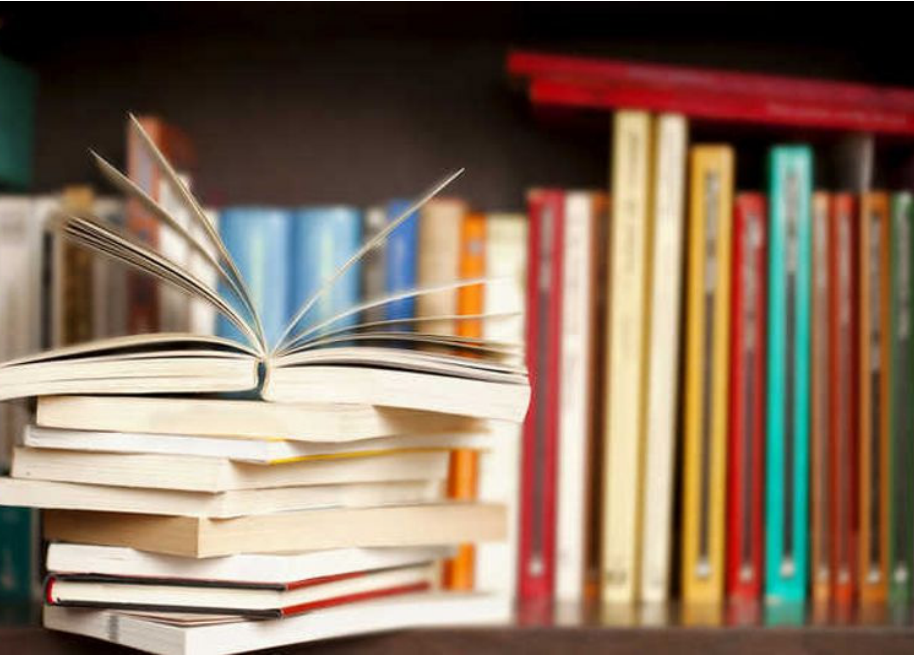
पत्रकारिता का इतिहास केवल खबरों, विचारों और घटनाओं का इतिहास नहीं है। इसके भीतर ऐसे अनेक प्रसंग भी छिपे हैं, जो बताते हैं कि किसी संपादक और पाठक के बीच का संबंध आखिर किस आधार पर कायम रहता है। कागज पर छपी सामग्री कुछ समय बाद पुरानी हो जाती है, लेकिन ईमानदारी से निभाया गया विश्वास लंबे समय तक जीवित रहता है। साहित्य और पत्रकारिता की दुनिया में अमृता प्रीतम का ‘नागमणि’ से जुड़ा प्रसंग इसी विश्वास की ताकत को सामने लाता है। अमृता प्रीतम केवल एक प्रसिद्ध कवयित्री नहीं थीं, बल्कि साहित्य में नए स्वरो को अवसर देने वाली रचनाकार भी थीं। वर्ष 1966 में उन्होंने रंगकमी इमरोज के साथ मिलकर ‘नागमणि’ प्रकाश का प्रकाशन शुरू किया। उस समय साहित्यिक पत्रिका निकालना आर्थिक और व्यवस्थागत दोनों दृष्टियों से कठिन कार्य था। इसके बावजूद इस पत्रिका को उन्होंने लगातार आगे बढ़ाया। इसका एक महत्वपूर्ण उद्देश्य उभरते हुए लेखकों और कवियों को ऐसा मंच उपलब्ध कराना था, जहां वे बिना किसी बड़े नाम या स्थापित पहचान के अपनी रचनात्मकता सामने रख सकें।

‘नागमणि’ की यात्रा केवल संपादक और लेखकों के भरोसे नहीं चली। पाठकों ने भी इस यात्रा में अपनी भूमिका निभाई। पत्रिका के लिए पाठकों से चंदा प्राप्त होता था और अमृता प्रीतम अपनी कमाई का धन भी उसमें लगाती थीं। सीमित साधनों में साहित्यिक प्रकाशन को जारी रखना आसान नहीं था, लेकिन प्रतिबद्धता ने इस कठिनाई को पीछे छोड़ दिया।

अक्सर कहा जाता है कि इन दिनों लोगों की पढ़ने में दिलचस्पी नहीं रही। मोबाइल और सोशल मीडिया ने इसे और कम किया है। कुछ पहले तक किसी भी चीज पर फोकस दो मिनट कहा जाता था, अब वह चालीस सेकेंड भर का रह गया है। ऐसे में कोई मोटे-मोटे ग्रंथ क्यों पढ़े, जबकि सोशल मीडिया पर देखने-पढ़ने को इतना कुछ है। बड़ी से बड़ी किताबों के दो मिनट में पढ़े जाने वाले सारांश या रील्स और वीडियोज मौजूद हैं। लगभग दो दशक पहले अखबारों में माना जाने लगा था कि युवा वर्ग अखबारों में छपे लंबे-लंबे लेख, कहानियां, संपादकीय आदि नहीं पढ़ना चाहता। उसकी भाग-दौड़ की ज़िंदगी में पढ़ने के लिए उसके पास समय नहीं है। इसलिए इनके आकार छोटे कर दिए गए। इसका कारण यह था कि बताया जा रहा था कि अपने देश में युवाओं की संख्या पैसेट प्रतिशत है। उन्हीं की जेब में पैसे हैं, इसलिए पोर्टेबिल बायर और पाठक वही हैं। इसलिए जैसा वे चाहते हैं, वैसा ही किया जाए। हालांकि, इस कारण से युवाओं ने पढ़ना शुरू किया था, यह महसूस नहीं हुआ। जबकि इसके विपरीत जमीनी हकीकत यह नजर आती रही है कि अखबारों, किताबों और पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने वाले बड़ी उम्र के लोग हैं। आज भी बुजुर्गों को बड़ी संख्या में अखबार और किताबें पढ़ते देखा जा सकता है, क्योंकि वे उन्हें विश्वसनीय मानते हैं। इसके अलावा, किताबें और अखबार पढ़ने से न आंछों पर जोर पड़ता है, न बिजली का अतिरिक्त बिल आता है। नेट चले न चले, हमसे भी कोई फर्क नहीं पड़ता।इन दिनों तो किताबों को ऑनलाइन फोन, लैपटॉप आदि पर आसानी से पढ़ा जा सकता है। ऐसे में पढ़ने की दिलचस्पी क्यों कम करती जा रही है, यह सोचने की बात है। जबकि शहर-दर-शहर बड़े-बड़े पुस्तक मेले भी लगते हैं। इनमें पढ़ने की बिज्जी भी खूब होती है। बहुत से लोग कहते हैं कि दरअसल ज्यादा किताबें सरकारी खरीद में बिकती हैं। व्यक्तिगत

जब संपादन से बड़ा हो जाता है विश्वास

लगभग 33 वर्षों तक पत्रिका प्रकाशित होती रही और साहित्य के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाए रखी। किसी भी प्रकाशन के लिए लंबे समय तक चलना अपने आप में उपलब्धि है, लेकिन उससे भी बड़ी उपलब्धि यह है कि वह अपने पाठकों का विश्वास बनाए रखे। ‘नागमणि’ के सामने भी एक समय ऐसी परिस्थिति आई, जब परिस्थितियों ने प्रकाशन को रोकने के लिए मजबूर कर दिया। अमृता प्रीतम अस्वस्थ रहने लगीं और पत्रिका का प्रकाशन जारी रखना संभव नहीं रहा। यहीं से उनके संपादकीय चरित्र की वह बात सामने आती है, जो इस पूरे प्रसंग को विशेष बना देती है। पत्रिका के लिए कई पाठकों ने पहले से चंदा भेज रखा था। यदि कोई प्रकाशन किसी कारणवश बंद हो जाए तो उसके सामने यह सवाल स्वाभाविक रूप से आता है कि अग्रिम राशि का क्या किया जाए। इसी कठिनाइयों का हवाला देकर रकम अपने पास रखने के कई तर्क निकाले जा सकते हैं। लेकिन अमृता प्रीतम ने अपने लिए ऐसा कोई रास्ता नहीं चुना। उन्होंने पुराने रिफॉंड देखे और यह पता लगाया कि किस पाठक का कितना चंदा अग्रिम जमा है। इसके बाद संबंधित राशि मनीऑर्डर के जरिए पाठकों को वापस भेज दी गई। साथ ही पत्रिका का प्रकाशन जारी न रख पाने के लिए उनसे खेद भी व्यक्त किया गया। यह निर्णय आर्थिक लेन-देन से कहीं आगे जाकर पाठक के अधिकार और सम्मान की रक्षा करता था। जब उनसे पूछा गया कि आखिर चंदा वापस करने



और निजी बिज्जी बहुत कम होती है।

हाथ-हाथ में मोबाइल आने और स्क्रीन टाइम बढ़ने के कारण दुनिया भर में चिंता प्रकट की जा रही है। इस समय को किस तरह से कम किया जाए, इस पर बहुत से विद्वान्‌ माथापन कर रहे हैं। एक समय ऐसा था, जब मान लिया गया था कि हमें जीवन से कागज और किताबों की विदाई करनी है। स्क्रीन में ही हमारा भविष्य छिपा है। लेकिन अच्छे परिणाम न देखकर बहुत कुछ बदल भी रहा है। स्वीडन में लगभग पंद्रह साल पहले बिल्कुल छोटी, यानी प्राथमिक कक्षाओं में ही बच्चों को लैपटॉप दे दिए गए। उन्हें सारी पढ़ाई-लिखाई इन्हीं पर करनी थी। कक्षा से किताबों और कॉपियों की विदाई हो गई। लेकिन पता चला कि इस कारण से बच्चों ने नया कुछ नहीं सीखा। ध्यान केंद्रित करने में कमी आई। वे आपस में एक-दूसरे से मिलने-जुलने, खेलने में कम दिलचस्पी

लेने लगे और बच्चे चिड़चिड़े हो गए। उनका गुस्सा बढ़ा। वे नया कुछ सीखने से बचने लगे। बालपन में ही उन्हें गर्दन, कमर और रीढ़ की हड्डियों की समस्याओं ने घेर लिया। तब वहां की सरकार ने बाकायदा इसका अध्ययन कराया। इस अध्ययन के निष्कर्ष के आधार पर ही अब वहां के स्कूलों में कॉपी, किताबों की वापसी हो गई है। अन्य बहुत से देश भी इस बारे में सोच रहे हैं।

हाल ही में सिंगापुर के बारे में भी पता चला कि वहां किताबें पढ़ने के लिए विशेष प्रोत्साहन योजना शुरू की गई है। सिंगापुर की सरकार पूरे विश्व में पहली सरकार है, जिसने इस तरह की योजना शुरू की है। इसके अनुसार आपको ऑनलाइन पंद्रह मिनट पढ़ना है। यदि कोई इस तरह के पचास सेशन पूरे कर लेगा, तो इनाम के तौर पर उसे सिंगापुर में चलने वाला एक डॉलर दिया जाएगा। लेकिन इसमें एक शर्त यह

बारबरा सहाकियन ने अमेरिका के दस हजार बच्चों पर एक शोध किया। शोध के निष्कर्ष के तौर पर बारबरा ने बताया कि जो बच्चे छुटपन से ही शौक के लिए पढ़ने लगते हैं, बड़े होकर उन्हें दूसरों से बातचीत करने, जुड़ने और जीवन में आगे बढ़ने में बहुत सहायता मिली। उनका स्क्रीन टाइम भी कम हुआ। नौद भी अच्छी आई। इसका कारण यह है कि हम किसी की लिखी किताब पढ़ते हैं, तो हमें दूसरों के विचारों और जीवन को समझने में मदद मिलती है।

इसी तरह हम दूसरों के लिखे से सीखकर अपनी ज़िंदगी को भी बेहतर बनाने की सोचते हैं। अकेलापन भी कम महसूस होता है, क्योंकि किताबों को मनुष्य का सबसे बेहतर दोस्त बताया जाता है। यह भी लगता है कि पढ़कर हम बहुत कुछ जान सकते हैं। अच्छी बातें भी

सीख सकते हैं। पढ़ने से हमारी ध्यान केंद्रित करने की क्षमता भी बढ़ती है। यही नहीं, पढ़ते वक़्त हमारा ध्यान किसी कहानी, कविता, लेख आदि में रहता है, तो दुनिया की तमाम समस्याओं और अपनी परेशानियों से भी दूर हो जाते हैं। हमारा तनाव कम होता है, किसी विषय पर फोकस करने की क्षमता भी बढ़ती है। पढ़ने के लिए किसी आयु का भी बंधन नहीं है। बालपन से लेकर बुजुर्ग अवस्था तक, पढ़ना कभी भी शुरू किया जा सकता है। कहीं भी बैठकर पढ़ा जा सकता है—घर में, पार्क में, लाइब्रेरी में, यात्राओं के दौरान।

कौन-सी किताब पढ़ें, इसके लिए हमारी रुचियां भी भिन्न हो सकती हैं। जैसे कि किसी को कहानियां पसंद हैं, तो किसी को कविताएं, लेख। कहानियों, कविताओं और लेखों के भी विषय भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। कोई हास्य कहानी पसंद करता है, तो किसी को प्रेम कथाएं पसंद हैं। इसीलिए यदि पुस्तक कभी नीचे गिर जाए, तो उसे उठाकर माथे से लगाया जाता है। ऑनलाइन पढ़ाई के समय में ये बातें कुछ दूर हो गई हों, लेकिन किताबें हमारे जीवन को बदल सकती हैं, परेशानियों को दूर करती हैं, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य प्रदान करती हैं।

छुआछूत मिटाने का संदेश दिया गांधीजी की पाठशाला ने

राजधानी का मंदिर मार्ग बहुत लंबा नहीं है। करीब एक-सवा किलोमीटर होगा। यह सड़क मंदिरों से भरी है। पर इधर शिक्षा के मंदिर यानी स्कूल भी खूब हैं। दिल्ली की किसी और सड़क पर इतने स्कूल शायद ही हों। अजीब संयोग है। महात्मा गांधी ने इसी व्यस्त सड़क के दो मंदिरों में अस्पृश्यता और जाति की बुराई के खिलाफ लड़ाई ली। मंदिर मार्ग के एक छोर पर बिरला मंदिर है तो दूसरे छोर पर वाल्मीकि मंदिर है। क्या इतने स्कूलों ने उन्हें शिक्षक की प्रेरणा दी? शायद! पक्की बात यह है कि वाल्मीकि मंदिर में रहते हुए वे शिक्षक भी बने। पूरे अर्थों में बने। आज गांधी जयंती है। बीते कुछ दिनों से उस कर्मरे की साफ-सफाई चल रही है जिसमें गांधी जी रहे थे। वे यहां 1 अप्रैल 1946 से 10 जून 1947 तक ठहरे। बीच-बीच में कहीं गए भी, और फिर लौटे भी। कुल दो सी चौदह दिनों यहीं बिताए।इससे बहुत पहले उन्होंने इसी सड़क पर एक ओर काम किया था। यहां 12 मार्च 1939 को उन्होंने बिड़ला मंदिर का उद्घाटन किया। शर्त साफ थी, मंदिर सबके लिए खुला रहेगा। दलित भी अंदर जा सकेगें। दिल्ली में किसी वास्तुकार द्वारा डिजाइन किए गए इस प्रथम मंदिर का उद्घाटन करने से पहले उन्होंने यही शर्त रखी। जाति के आधार पर किसी का प्रवेश नहीं करेगा जाएगा। आपको इसके मने गेट के बाहर एक शिलापट्ट मिलेगी। उस पर साफ लिखा है कि यहां किसी की रक्षा नहीं है। कुछ वर्षों बाद गांधी जी वाल्मीकि मंदिर के बीच मंदिर परिसर में रहे। वह समय था और उनके जीवन का खास अध्याय है। शायद पहली और आखिरी बार वे पूरे अर्थों में शिक्षक बने। वे जानते थे कि वाल्मीकि समुदाय का जीवन बदलने का स्थायी रास्ता शिक्षा ही है। उनके प्रति उनका भाव गहरा था। जब वे आए तब अधिकतर वाल्मीकि परिवार झुगियां में रहते थे। वे गोल मार्केट, इरविन रोड और कर्नाट प्लस के आसपास सफाई का काम करते थे। इस समय कृष्ण विद्यार्थी वाल्मीकि मंदिर के केयरटेकर हैं। वे गांधी जी के शिक्षक बनने की कहानी सुनाते हैं। गांधी जी जब यहां आए तो उन्होंने बहुत कष्ट हुआ। इसलिए कि वाल्मीकि परिवार लगभग पूरी तरह निरक्षर थे। किसी ने स्कूल का चेहरा तक नहीं देखा था। तब उन्होंने अपने कर्मों में बच्चों और बड़ों को पढ़ाना शुरू किया। वे हिंदी पढ़ाते थे। अंग्रेजी भी पढ़ाते थे। उनमें कृष्ण विद्यार्थी भी पिता भी थे।

गांधी जी अपनी कक्षाओं को लेकर नहीं है। करीब गंभीर थे। कक्षा रोज की प्रार्थना से पहले शुरू होती थी। पाठ खत्म किए बिना वे अक्सर बड़े नेताओं से मिलने को टाल देते थे। दीवारों पर उस समय की तस्वीरें लगी हैं। वे पीली पड़ने लगी हैं। एक पेंटिंग कमरे की असली कहानी कहती है। उसमें कई बच्चे बापू के पांवों से लिपटे हैं। चित्रकार का नाम खो गया है। पर उस कमरे का भाव नहीं खोया। फर्श पर कालीन बिछा है। बीच में लकड़ी की मेज है। गांधी जी उसी पर लिखते थे। दाईं ओर चारपाई पड़ी है। उसी पर वे सोते थे। पास में छोटा चरखा रखा है। कुछ नहीं हटाया गया। कमरा वैसा ही लगता है जैसा उनके रहने के समय था।

दिल्ली ब्रदरहुड सोसाइटी से जुड़े ब्रदर सोलोमन जॉर्ज के मुताबिक, ‘वे महीने भारत के राजनीतिक जीवन के सबसे व्यस्त महीनों में थे। कैबिनेट मिशन दिल्ली में था। सत्ता हस्तान्तरण की बातें रोज चल रही थीं।’ कांग्रेस नेता सलाह के लिए वाल्मीकि बस्ती आते थे। फिर भी वे उन बच्चों के साथ बैठने का समय निकालते थे, जिनके हाथ में कभी किताब नहीं आई थी। गांधी जी की पाठशाला करीब तीस बच्चों से शुरू हुई। जल्दी ही करीब पचहत्तर हो गई। गोल मार्केट, पहाड़गंज और इरविन रोड के लड़के-लड़कियां भी आने लगे। ‘ सोलोमन जॉर्ज यहां पर होने वाली सर्व धर्म प्रार्थना सभा में भाग लेते हैं। कक्षा के बाद बात किताब पर नहीं रुकती थी। बापू बच्चों से उनकी बस्ती, उनके मां-बाप के काम और उनके डर के बारे में भी पूछते थे। कई बच्चे पहली बार यह महसूस कर रहे थे कि कोई बड़ा आदमी उनकी बात सुनने के लिए रुका है। पढ़ाई उनके लिए केवल अक्षर सीखने का काम नहीं रही। वह ये भरोसा भी थी कि वे भी किसी स्कूल की चौखट पार कर सकते हैं। गांधी जी के लिए पाठशाला केवल अक्षर और शब्द नहीं थी। बल्कि वह झुगियां में रहते थे। वे गोल मार्केट, इरविन रोड और कर्नाट प्लस के आसपास सफाई का काम करते थे। इस समय कृष्ण विद्यार्थी वाल्मीकि मंदिर के केयरटेकर हैं। वे गांधी जी के शिक्षक बनने की कहानी सुनाते हैं। गांधी जी जब यहां आए तो उन्होंने बहुत कष्ट हुआ। इसलिए कि वाल्मीकि परिवार लगभग पूरी तरह निरक्षर थे। किसी ने स्कूल का चेहरा तक नहीं देखा था। तब उन्होंने अपने कर्मों में बच्चों और बड़ों को पढ़ाना शुरू किया। वे हिंदी पढ़ाते थे। अंग्रेजी भी पढ़ाते थे। उनमें कृष्ण विद्यार्थी भी पिता भी थे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने पोरबंदर में पूज्य बापू को श्रद्धासुमन अर्पित कर भावांजलि दी

► **राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी की 157वीं जयंती के अवसर पर पोरबंदर के कीर्तिमंदिर में सर्वधर्म प्रार्थना सभा आयोजित हुई**
► **वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया, भाई श्री रमेशभाई ओझा सहित महानुभाव उपस्थित रहे**
मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल
► सर्वधर्म प्रार्थना परस्पर सम्मान, शांति, समरसता और राष्ट्र एकता को मजबूत बनाती है
► प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र से सुदूरवर्ती व्यक्ति के कल्याण को प्राथमिकता दी जा रही है
► गांधीजी के स्वच्छता और स्वराज के विचारों के अनुरूप स्वच्छ भारत मिशन और आत्मनिर्भर भारत के संकल्प को जनआंदोलन का स्वरूप मिला है
► 2047 तक विकसित भारत के निर्माण के लिए आत्मनिर्भरता, गरीब कल्याण, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्र प्रथम की भावना के साथ आगे बढ़ने का आह्वान



गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल की प्रेरक उपस्थिति में महात्मा गांधीजी की जयंती पर पोरबंदर के कीर्तिमंदिर में सर्वधर्म प्रार्थना सभा आयोजित की गई। इस दौरान मुख्यमंत्री ने पूज्य बापू को श्रद्धासुमन अर्पित किए। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने पूज्य बापू को भावांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सत्य और अहिंसा के पुजारी, युगपुरुष महात्मा गांधीजी ने पोरबंदर की इस पवित्र धरती पर जन्म लेकर पूरे विश्व को सत्य, अहिंसा, सर्वोदय और

विश्वबंधुत्व का मार्ग दिखाया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पूज्य बापू कहते थे कि प्रार्थना आत्मा का भोजन है। प्रार्थना केवल शब्दों का उच्चारण नहीं, बल्कि अंतरात्मा के साथ संवाद, आत्मपरीक्षण और सदाचार के लिए आंतरिक शक्ति है। व्यक्ति के जीवन में प्रार्थना विनम्रता, संयम, करुणा और अपनी भूल स्वीकार कर उसमें सुधार करने की प्रेरणा देती है। जब प्रार्थना सभा व्यक्तिगत इच्छाओं से ऊपर उठकर सभी के कल्याण, परस्पर

विश्वास, सहानुभूति और सेवाभाव से जुड़ने की प्रेरणा देती है। उन्होंने आगे कहा कि भारत की विशेषता उसकी विभिन्न आस्थाओं, परंपराओं और जीवन पद्धतियों में निहित एकता में है। सर्वधर्म प्रार्थना किसी एक आस्था को छोटी या बड़ी नहीं मानती, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी श्रद्धा के साथ गौरवपूर्वक जीने का समान अधिकार और परस्पर सम्मान का संदेश देती है। सर्वधर्म समभाव की यह भावना समाज में अविश्वास को कम करके समरसता,

शांति और राष्ट्र एकता को और अधिक मजबूत बनाती है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पूज्य बापू के सर्वधर्म समभाव के ध्येय को 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र द्वारा आगे बढ़ाया है। वंचित, पीड़ित, शोषित और सुदूरवर्ती व्यक्ति के कल्याण को केंद्र में रखते हुए गाँवों और गरीबों तक विकास और सुविधाएँ पहुँचाने की दिशा में देश आगे बढ़ रहा है। गांधीजी के स्वराज के

विचार के साथ आत्मनिर्भर भारत का संकल्प जुड़कर राष्ट्र के विकास की आधुनिक अभिव्यक्ति बन रहा है। उन्होंने आगे कहा कि पूज्य बापू द्वारा दिए गए स्वच्छता के विचार को अधिक व्यापक बनाते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में स्वच्छ भारत मिशन को जनआंदोलन का स्वरूप मिला है। बच्चों से लेकर वृद्धों तक नागरिक स्वच्छता के स्वयंसेवक और स्वच्छाग्रही बन रहे हैं। इसी प्रकार, पूज्य बापू को प्रिय खादी को 'खादी फॉर नेशन, खादी

फॉर फैशन' के संदेश के साथ नई पीढ़ी और युवाओं से जोड़ने के प्रयास किए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले वर्षों में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में गरीब, वंचित और सुदूरवर्ती व्यक्ति तक सुख-सुविधाएँ पहुँचाने के संकल्प के साथ राष्ट्र के विकास को गति दी गई है। पूज्य बापू के अहिंसा, सर्वोदय और विश्वबंधुत्व के विचारों के अनुरूप 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना से भारत पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में देख रहा है और संवाद, भागीदारी त मानव-केंद्रित सहयोग के लिए विश्वसनीय सहयोगी के रूप में अपनी भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि पूज्य बापू के नेतृत्व में सत्य और अहिंसा के मार्ग पर भारत ने अंग्रेजी शासन से स्वतंत्रता प्राप्त की थी। अब आजादी की शताब्दी वर्ष 2047 तक विकसित भारत के संकल्प को साकार करने के ऐतिहासिक अवसर देश के सामने है। इस अमूलकाल की यात्रा में आत्मनिर्भरता, गरीब कल्याण, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के संकल्प के साथ आगे बढ़ने का उन्होंने आह्वान किया। अंत में मुख्यमंत्री ने सर्वधर्म प्रार्थना सभा के माध्यम से सभी से पूज्य बापू के सत्य, अहिंसा, प्रेम और सर्वोदय

के मार्ग पर चलने का संकल्प लेने का अनुरोध किया। हृदय में प्रेम, जीवन में अहिंसा, समाज में समरसता और राष्ट्र प्रथम की भावना रखकर सभी को अपने कर्तव्य का निष्ठापूर्वक पालन करना चाहिए, ऐसी भावना व्यक्त करते हुए उन्होंने पूज्य बापू को भाववंदना अर्पित की। वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया ने कहा कि गांधीजी एक ऐसे दैवीय व्यक्तित्व थे, जिन्होंने छोटे-छोटे प्रयासों से मानव जीवन बदलने का कार्य किया है। उन्होंने आज की वैश्विक स्थिति के संदर्भ में स्पष्ट किया कि अंततः समाधान के लिए बातचीत की मेज पर ही आना पड़ता है; यदि देश इस संवाद को पहले ही कर ले तो लाखों मानव जिंदगियाँ और पीड़ा बच सकती है। हिंसा के सामने अहिंसा और असत्य के सामने सत्य की गांधी विचारधारा आज भी समग्र विश्व के लिए शाश्वत एवं अनिवार्य है। उन्होंने पोरबंदर की पवित्र भूमि से जुड़ी इस दैवीयक पहचान को गौरवपूर्ण कहा। इसके साथ ही उन्होंने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के विजन का उल्लेख करते हुए आह्वान किया कि स्वच्छता केवल उत्सव नहीं, बल्कि हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बनना चाहिए। घर, गली

और देश को स्वच्छ रखकर गांधीजी के विचारों को आचरण में उतारना ही बापू के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। इस प्रार्थना सभा में पूज्य बापू के सत्य, अहिंसा, स्वच्छता और सर्वधर्म समभाव के शाश्वत जीवनमूल्यों का स्मरण किया गया। कलाकार मंडली ने सुंदर प्रार्थना तथा भावमय गीत प्रस्तुत किए। प्रार्थना सभा में भाईश्री रमेशभाई ओझा, पोरबंदर मनपा महापौर श्री सागर मोदी, जिला पंचायत की अध्यक्ष श्रीमती शीतलबेन ओडेदार, पूर्व कैबिनेट मंत्री श्री बाबूभाई बोखिरिया, पूर्व सांसद श्री रामभाई मोकरिया, जिला कलेक्टर श्री एस. डी. धानाणी, जिला विकास अधिकारी श्री बी. बी. चौधरी, मनपा आयुक्त श्री टी. सी. तीरथाणी, जिला पुलिस अधीक्षक श्री भागीरथसिंह जाडेजा, रियर एडमिरल श्रीननु गुरु, डीआईजी सुभांशु श्री नारायण बाजपेयी, निवासी उपर कलेक्टर श्री आशीष मियात्रा, उप महापौर श्री मनोष शियाल, 'स्टैंडिंग कमेटी के अध्यक्ष श्री विक्रमभाई ओडेदार, प्रांत अधिकारी श्री संदीप जादव, जिला भाजपा अध्यक्ष डॉ. चेतनाबेन तिवारी, जिला भाजपा संगठन के प्रभारी श्री विमलभाई करगथरा सहित अधिकारी-पदाधिकारी, शहर के अग्रणी, स्कूल के विद्यार्थी व नागरिक उपस्थित रहे।

गांधी जयंती पर भावनगर मंडल में स्वच्छता ही सेवा-2026 के तहत व्यापक स्वच्छता अभियान

पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल में गांधी जयंती के अवसर पर स्वच्छता ही सेवा-2026 के अंतर्गत स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण एवं जनजागरूकता से जुड़ी विभिन्न गतिविधियों का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। कार्यक्रम मंडल रेल प्रबंधक, भावनगर मंडल श्री दिनेश वर्मा के निर्देशन में, अपर मंडल रेल प्रबंधक श्री ऋचिक शर्मा के मार्गदर्शन तथा वरिष्ठ मंडल यांत्रिक इंजीनियर श्री संतोष कुमार मिश्रा के नेतृत्व में आयोजित किया गया।



वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि 2 अक्टूबर 2026 को मंडल कार्यालय से स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण से संबंधित नारों के साथ प्रभात फेरी निकाली गई। मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय के प्रवेश द्वार से प्रारंभ हुई प्रभात फेरी में अधिकारियों एवं कर्मचारियों का संदेश दिया गया। प्रभात फेरी के माध्यम से स्वच्छता, स्वस्थ जीवनशैली एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता का संदेश दिया गया। इसके बाद भावनगर परा स्थित मेडिकल कॉलोनी परिसर में स्वच्छता अभियान

एवं वृक्षारोपण किया गया। साथ ही रेलवे अस्पताल, भावनगर परा परिसर में भी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा सामूहिक श्रमदान किया गया। इस अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने रेलवे अस्पताल, भावनगर परा में मीडिया को संबोधित करते हुए स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला तथा स्वच्छता को दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बनाने का संदेश

कर सम्मानित किया गया। विद्यार्थियों को स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण का संदेश समाज तक पहुँचाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इसी दरमियान भावनगर परा रेलवे स्टेशन पर प्रातः 08:30 बजे वाणिज्य विभाग एवं स्वयंसेवी समूह माही डेयरी के सहयोग से श्रमदान किया गया। इस अभियान में मंडल कार्यालय के वाणिज्य विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसी प्रकार के साफ-सफाई कार्यक्रम भावनगर मंडल के सभी स्टेशनों, कार्यालयों, स्वास्थ्य इकाइयों, कोचिंग डिपो में आयोजित किया गया।

अहमदाबाद : महात्मा गांधी जयंती के अवसर पर स्वच्छता पखवाड़ा-2026 के अंतर्गत पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल में आज मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश के नेतृत्व में 'स्वच्छ ट्रेक मेगा अभियान' का व्यापक आयोजन किया गया। अभियान के तहत मंडल के लगभग 3,000 किलोमीटर रेलवे ट्रैक की एक दिन में साफ-सफाई की गई, जो लगभग कश्मीर से कन्याकुमारी की दूरी के बराबर है। उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक अहमदाबाद मंडल के विभिन्न विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने मिलकर एक दिन में लगभग 3,000 किलोमीटर रेल ट्रैक की सफाई कर स्वच्छता अभियान में व्यापक सहभागिता का कीर्तिमान स्थापित किया।

इस अवसर पर साबरमती रेलवे स्टेशन पर मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश ने रेल अधिकारियों, कर्मचारियों, स्वच्छता प्रहरियों तथा स्काउट एवं गाइड के सदस्यों को स्वच्छता की शपथ दिलाई। सभी ने स्वच्छ रेल परिसर, स्वच्छ ट्रैक एवं स्वच्छ रेलवे के संकल्प को साकार करने तथा स्वच्छता एवं जनभागीदारी को बढ़ावा देने का सामूहिक संकल्प लिया।



इस अभियान के तहत मंडल के सभी स्टेशन मास्टर एवं सुपरवाइजर, क्लीनिंग स्टाफ तथा अन्य रेल कर्मचारियों द्वारा अपने होम स्टेशन से अगले स्टेशन तक ट्रैक एवं स्टेशन परिसर की साफ-सफाई में सक्रिय सहभागिता की गई। इसके साथ ही विभिन्न स्टेशनों, यादों, रेलवे कॉलोनियों तथा ट्रैक के किनारे के क्षेत्रों में एक साथ श्रमदान एवं विशेष स्वच्छता अभियान चलाया गया।

अहमदाबाद मंडल के विभिन्न स्टेशनों पर भी आज व्यापक स्तर पर स्वच्छता गतिविधियां आयोजित की गईं।

अहमदाबाद, साबरमती, वीरमगाम, मालिया, गिवाणा, राधनपुर, घांगघ्रा, महेसाणा, पालनपुर, भुज, गांधीधाम, असरवा एवं हिममतनगर सहित मंडल के विभिन्न स्टेशनों, यादों, रेलवे कॉलोनियों, हेल्थ यूनिट तथा ट्रैकसाइड क्षेत्रों में रेल कर्मचारियों एवं अन्य सहभागी समूहों द्वारा विशेष साफ-

सफाई अभियान चलाया गया। इस स्वच्छता अभियान में रेलवे कर्मचारियों, उनके परिवारों, रेलवे सुरक्षा बल, स्काउट एवं गाइड, स्वयंसेवी संगठनों तथा अन्य सहभागी समूहों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। श्रमदान के माध्यम से स्वच्छता को जनआंदोलन का स्वरूप देने का प्रयास किया गया। रेलवे परिचालन को प्रभावित किए बिना तथा रॉनिंग लाइनों के निरुद्ध सावधानियों का पालन करते हुए सभी स्वच्छता गतिविधियां संचालित की गईं।

स्वच्छता पखवाड़ा-2026 के अंतर्गत 1 अक्टूबर से 15 अक्टूबर 2026 तक अहमदाबाद मंडल में विभिन्न स्वच्छता एवं जागरूकता गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। आगामी कार्यक्रमों के तहत 3 से 5 अक्टूबर तक प्रमुख स्थानों पर गहन सफाई अभियान, 6 से 8 अक्टूबर तक ट्रैकसाइड एवं लीगेसी वेस्ट की सफाई, 9 से 10 अक्टूबर तक अनावश्यक पोस्टर, बैनर एवं गुटखा के दाग हटाने का अभियान तथा 11 से 15 अक्टूबर तक टोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2026 के अनुपालन एवं जागरूकता से संबंधित गतिविधियां आयोजित की जाएंगी।

अहमदाबाद मंडल द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा-2026 के माध्यम से रेलवे परिसरों, ट्रैक, स्टेशनों एवं आसपास के क्षेत्रों में स्वच्छता को और सुदृढ़ करने के साथ-साथ यात्रियों, रेल कर्मचारियों एवं आमजन में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने पर विशेष जोर दिया जा रहा है। 'स्वच्छ ट्रेक मेगा अभियान' स्वच्छ रेल, स्वच्छ ट्रैक एवं स्वच्छ रेलवे के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने तथा स्वच्छता को जनभागीदारी का अभिन्न हिस्सा बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गांधी जयंती पर गांधीनगर में खादी की खरीदारी कर डिजिटल भुगतान के माध्यम से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के ' डिजिटल भारत' के संकल्प को गति दी

मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की खादी के उपयोग एवं खरीदारी का दायरा बढ़ाकर गरीब जरूरतमंद परिवारों को आर्थिक आधार देने की अपील का प्रतिसाद दिया

गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने गांधी जयंती के अवसर पर गांधीनगर में खादी हाट से खादी की खरीदारी की। मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने खादी फॉर फैशन-खादी फॉर नेशन के मंत्र के साथ खादी के उपयोग और खादी खरीदारी का दायरा बढ़ाने की गई अपील का प्रतिसाद दिया। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल पोरबंदर में कीर्ति मंदिर में गांधी जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित सर्वधर्म प्रार्थना सभा में



सहभागी होकर गांधीनगर लौटते ही सौराष्ट्र रचनात्मक समिति के खादी ग्रामोद्योग हाट पहुंचे। उन्होंने इस खादी भंडार से विभिन्न खादी वस्त्र उत्पादों की खरीदारी करके डिजिटल भुगतान को गति देने के प्रधानमंत्री के आह्वान के अनुरूप डिजिटल भुगतान किया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने खादी के उत्पादों और खादी खरीदारी के माध्यम से खादी बुनाई से जुड़े गरीब जरूरतमंद

परिवारों के जीवन में आर्थिक आधार देने की अनुरूपणीय पहल गुजरात में उनके मुख्यमंत्री कार्यकाल से शुरू करवाई है। मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने भी शुक्रवार को खादी की खरीदारी कर उसे और गति दी। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के साथ ऊर्जा मंत्री श्री ऋषिकेश पटेल, विधायक श्रीमती रीटाबेन पटेल तथा पदाधिकारी भी जुड़े।

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय ने दिलाई स्वच्छता शपथ,स्वच्छता पखवाड़ा 2026 के शुभारंभ के अवसर पर अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने स्वच्छता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई

पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री रामाश्रय पाण्डेय ने स्वच्छता ही सेवा 2026 अभियान एवं स्वच्छता पखवाड़ा 2026 के अंतर्गत पश्चिम रेलवे मुख्यालय, चर्चगेट में अधिकारियों एवं कर्मचारियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई। इस पहल के माध्यम से स्वच्छता, साफ-सफाई तथा स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण बनाए रखने की सामूहिक जिम्मेदारी के प्रति पश्चिम रेलवे की प्रतिबद्धता को दोहराया गया।



पर हस्ताक्षर किए तथा स्वच्छता अभियान में व्यक्तिगत जिम्मेदारी एवं सामूहिक भागीदारी के संदेश को सुदृढ़ किया। अभियान के अंतर्गत प्रस्तावित अन्य गतिविधियों में "स्वच्छ रेल, स्वच्छ भारत" के संदेश के साथ स्वच्छ रथ,प्रभात फेरियां,

"एक पेड़ माँ के नाम" के अंतर्गत पौधा रोपण अभियान, स्वच्छता ही सेवा 2026 के परिणामों की समीक्षा तथा उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली इकाइयों एवं स्वयंसेवकों का सम्मान शामिल है। पश्चिम रेलवे द्वारा 1 से 15 अक्टूबर,

2026 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया जा रहा है, जिसके अंतर्गत स्टेशनों, ट्रेनों, रेलवे कॉलोनियों एवं कार्यालयों में विभिन्न स्वच्छता अभियान तथा जागरूकता गतिविधियां आयोजित की जा रही हैं। इन पहलों के माध्यम से पश्चिम रेलवे स्वच्छता

को साझा जिम्मेदारी के रूप में बढ़ावा देने के अपने प्रयासों को निरंतर जारी रखे हुए है तथा रेल कर्मचारियों एवं यात्रियों को स्वच्छ एवं हरित रेलवे वातावरण के निर्माण में सक्रिय रूप से योगदान देने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है।

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में अगले सप्ताह तीन नए न्यायाधीशों की नियुक्ति का रास्ता साफ होने की संभावना है। सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने 29 सितंबर को तीन हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीशों को शीप अदालत में पदोन्नत करने की सिफारिश की थी। नियुक्ति प्रक्रिया से जुड़े सुझों के अनुसार, गुजरात हाईकोर्ट की मुख्य न्यायाधीश सुनीता अग्रवाल, दिल्ली हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश देवेंद्र कुमार उपाध्याय और तेलंगाणा हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश अपारेश कुमार सिंह की सुप्रीम कोर्ट में नियुक्ति से जुड़ी प्रक्रिया अगले सप्ताह पूरी हो सकती है। नियुक्ति की औपचारिक प्रक्रिया पूरी होने और तीनों न्यायाधीशों के शपथ लेने के बाद शीप अदालत में न्यायाधीशों की संख्या बढ़कर 37 हो जाएगी।

सुप्रीम कोर्ट में सुप्रीम कोर्ट में मुख्य न्यायाधीश समेत 34 न्यायाधीश कार्यरत हैं। तीन नए न्यायाधीशों के कार्यभार संभालने के बाद यह संख्या 37 तक पहुंच जाएगी। सुप्रीम कोर्ट में स्वीकृत न्यायाधीशों की अधिकतम संख्या 38 है, ऐसे में तीन नियुक्तियों के बाद भी शीप अदालत में एक पद रिक्त रहेगा। नई नियुक्तियां होने पर न्यायालय की मौजूदा न्यायिक क्षमता में महत्वपूर्ण वृद्धि होगी और विभिन्न संवैधानिक, कानूनी तथा अपीलीय मामलों की सुनवाई के लिए उपलब्ध पीठों की संख्या में भी बदलाव की संभावना बनेगी।

सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने 29 सितंबर को तीनों मुख्य न्यायाधीशों के नामों की सिफारिश की थी। कॉलेजियम और विभिन्न संवैधानिक, कानूनी तथा अपीलीय मामलों की सुनवाई के लिए उपलब्ध पीठों की संख्या में भी बदलाव की संभावना बनेगी। सुप्रीम कोर्ट में कुल 37 न्यायाधीश हो जाएंगे। स्वीकृत संख्या 38 होने के कारण एक पद फिर भी खाली रहेगा। इसका अर्थ है कि शीप अदालत की पूरी स्वीकृत क्षमता अभी भी हासिल नहीं होगी। हालांकि वर्तमान 34 न्यायाधीशों की तुलना में 37 का आंकड़ा न्यायालय की कार्यशील क्षमता में बढ़ोतरी को दर्शाएगा। औपचारिक अधिसूचना जारी होने और नियुक्त न्यायाधीशों के शपथ लेने के बाद ही नियुक्ति प्रभावी मानी जाएगी। ऐसे में अगले सप्ताह नियुक्ति पूरी होने और सुप्रीम कोर्ट में न्यायाधीशों की नियुक्ति एवं पदोन्नति के लिए नामों पर विचार करता है। सिफारिश के बाद केंद्र सरकार संबंधित प्रक्रिया को आगे बढ़ाती है और नियुक्ति की अंतिम संवैधानिक औपचारिकताएं पूरी होने के बाद न्यायाधीश पद ग्रहण करते हैं। तीनों नामों की सिफारिश ऐसे समय में हुई है जब शीप अदालत में न्यायिक कार्यभार लगातार महत्वपूर्ण बना हुआ है। नए न्यायाधीशों के आने से अलग-अलग पीठों के गठन और मामलों की सुनवाई के लिए न्यायिक उपलब्धता बढ़ेगी। हालांकि नई नियुक्तियों के वास्तविक प्रभाव का आकलन उनके कार्यभार संभालने और पीठों के गठन के बाद ही किया जा सकेगा। अगले सप्ताह नियुक्ति प्रक्रिया पूरी होने की स्थिति में तीनों हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश सुप्रीम कोर्ट में न्यायाधीशों के रूप में कार्यभार संभालेंगे। इसके साथ ही शीप अदालत में कार्यरत न्यायाधीशों की संख्या 34 से बढ़कर 37 हो जाएगी। सुप्रीम कोर्ट की स्वीकृत क्षमता 38 होने के कारण इसके बाद भी एक पद रिक्त रहेगा। नियुक्ति प्रक्रिया पूरी होने के बाद शीप अदालत में न्यायिक पीठों के पुनर्गठन और मामलों के आवंटन से जुड़े प्रशासनिक फैसले भी किए जा सकते हैं।

राजस्थान कांग्रेस में कलह ने लिया नया मोड़, विश्वेंद्र सिंह ने छोड़ी पार्टी; डोटासरा से टकराव के बाद बढ़ी सियासी हलचल

जयपुर। राजस्थान कांग्रेस में लंबे समय से चल रही अंदरूनी खींचतान अब खुले टकराव और पार्टी छोड़ने तक पहुंच गई है। पूर्व मंत्री और भरतपुर के पूर्व राजपरिवार से जुड़े हरिष्ट नेता विश्वेंद्र सिंह ने कांग्रेस से अलग होने का ऐलान कर दिया है। इससे पहले उन्होंने प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा की कार्यशैली और संगठन के तौर-तरीकों पर सार्वजनिक रूप से सवाल उठाए थे। भरतपुर और डींग के नगर निकाय चुनावों में कांग्रेस के प्रदर्शन को लेकर शुरू हुआ विवाद अब इतना बढ़ गया कि पार्टी ने विश्वेंद्र सिंह को अनुशासनहीनता और पार्टी विरोधी गतिविधियों के आरोपों पर कारण बताओ नोटिस भी जारी कर दिया। सिंह ने इसके जवाब में सोशल मीडिया पर कहा कि पार्टी उनके खिलाफ कार्रवाई करने के लिए स्वतंत्र है और वह भी अपने राजनीतिक

अहमदाबाद मंडल पर कुछ ट्रेनों के समय में आंशिक परिवर्तन

उत्तर पश्चिम रेलवे द्वारा परिचालनिक कारण से कुछ ट्रेनों के समय में आंशिक परिवर्तन करने का निर्णय लिया गया है। जिसका विवरण निम्नानुसार है:

- ट्रेन संख्या 209१८ असारवा—उदयपुर सिटी सुपरफास्ट एक्सप्रेस के समय में ०४ अक्टूबर २०२६ से परिवर्तन किया गया है। यह ट्रेन असारवा से ०६:५० बजे के स्थान पर (१० मिनट पूर्व) ०६:४० बजे प्रस्थान करेगी तथा ०६.४५ बजे सरदारग्राम, ०६.४९ बजे नरोड़ा, ०७.०५ बजे नांदोल देहगाम, ०७.२७ बजे तलोद, ०७.४० बजे प्रांतिज, ०८.१८ बजे हिम्मतनगर पहुंचकर, उदयपुर सिटी १२:१० बजे पहुंचेगी।
- ट्रेन संख्या २०९८७ उदयपुर सिटी—असावा सुपरफास्ट एक्सप्रेस के समय में ०३ अक्टूबर २०२६ से परिवर्तन किया गया है। यह ट्रेन उदयपुर सिटी से १६.०५ बजे के स्थान पर (१५ मिनट देरी से) १६:२० बजे प्रस्थान करेगी तथा हिम्मतनगर, प्रांतिज, तलोद, नांदोल देहगाम, नरोड़ा एवं सरदारग्राम स्टेशनों पर संशोधित समय के अनुसार चलेगी तथा असारवा २१:४५ बजे पहुंचेगी।
- ट्रेन संख्या १९८२१ असारवा—कोटा

भविष्य को लेकर फैसला लेने के लिए स्वतंत्र है। विश्वेंद्र सिंह का कांग्रेस से अलग होना ऐसे समय हुआ है जब राजस्थान में निकाय चुनावों के बाद पार्टी पंचायत चुनाव की तैयारियों में जुटी है। भरतपुर-डींग क्षेत्र में लेकर पार्टी के भीतर पहले से असंतोष सामने आ रहा था। विश्वेंद्र सिंह ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए आरोप लगाया था कि स्थानीय संगठन में वास्तविक कार्यकर्ताओं की अनदेखी की गई और टिकट वितरण में उनकी राय को महत्व नहीं मिला। उन्होंने भरतपुर और डींग में कांग्रेस की चुनावी हार के लिए जिला संगठन और प्रदेश नेतृत्व को जिम्मेदार ठहराया था। इसके बाद उनका निशाना सीधे प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा पर गया।



विश्वेंद्र सिंह ने अपने सार्वजनिक बयानों में डोटासरा पर कई गंभीर आरोप लगाए और उनके इस्तीफे की मांग की। उन्होंने सोशल मीडिया पोस्ट में डोटासरा के परिवार से जुड़े आरएएस भती और साक्षात्कार के अंकों, ओबीसी प्रमाणपत्र तथा उनके शिक्षा मंत्री रहते रीट परीक्षा में कथित अनियमितताओं जैसे मुद्दों की जांच की मांग की। ये आरोप विश्वेंद्र सिंह की

४४ साल बाद बेटियों का एशियाई खेलों में स्वर्णिम परचम, चीन को हराकर रचा इतिहास

काकाмиगाहारा। भारतीय महिला हॉकी टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए एशियाई खेलों में ४४ साल बाद स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया। लालेरूमियामी के निर्णायक गोल और अनुभवी गोलकीपर सविता पूनिया की शानदार बचाव क्षमता के दम पर भारत ने शुक्रवार को फाइनल मुकाबले में गत चैंपियन चीन को १-० से शिकस्त दी। इस जीत के साथ भारतीय महिला हॉकी टीम ने न केवल एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक अपने नाम किया, बल्कि २०२८ लॉस एंजेलिस ओलंपिक के लिए भी सीधे क्वालिफाई कर लिया। भारतीय महिला हॉकी के लिए यह उपलब्धि इसलिए भी खास है, क्योंकि टीम ने इससे पहले वर्ष १९८२ में नई दिल्ली में हुए एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक हासिल किया था। इसके बाद लंबे अंतराल के बाद भारतीय बेटियों ने महाद्वीपीय खेलों में फिर से शीर्ष स्थान हासिल किया है। फाइनल मुकाबले में दोनों टीमों के बीच कड़ा संघर्ष देखने को मिला। चीन अपने घरेलू दर्शकों के सामने खिताब बचाने के इरादे से मैदान पर उतरा था, जबकि भारतीय टीम की नजर स्वर्ण पदक के साथ ओलंपिक टिकट हासिल करने पर थी। अन्य अद्यतन जानकारी के लिए यात्रीगण कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन करें।



मिनटों में ही अपने आक्रामक तेवर दिखा दिए। भारत को दसवें मिनट में उस समय बड़ी सफलता मिली, जब लालेरूमियामी ने शानदार अंदाज में गोल करके टीम को १-० की बढ़त दिला दी। यह गोल लालेरूमियामी के लिए भी बेहद खास रहा, क्योंकि वह अपना २००वां अंतरराष्ट्रीय मुकाबला खेल रही थीं। साक्षी राणा से मिली गेंद को उन्होंने बेहतरीन नियंत्रण के साथ अपने कब्जे में लिया और से शीर्ष स्थान हासिल किया है। फाइनल मुकाबले में दोनों टीमों के बीच कड़ा संघर्ष देखने को मिला। चीन अपने घरेलू दर्शकों के सामने खिताब बचाने के इरादे से मैदान पर उतरा था, जबकि भारतीय टीम की नजर स्वर्ण पदक के साथ ओलंपिक टिकट हासिल करने पर थी। अन्य अद्यतन जानकारी के लिए यात्रीगण कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन करें।

गांधी–शास्त्री जयंती पर सेवा कार्यो से जनकल्याण का संदेश, जरूरतमंदों और विद्यार्थियों की मदद

सूरत। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी और पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री की जयंती के अवसर पर सर्वोदय जन कल्याण ट्रस्ट और सांथीयर सेवा सहकारी मंडली की ओर से शिक्षा, सेवा और जनकल्याण से जुड़े विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। गांधी और शास्त्री के सादगी, सेवा, स्वावलंबन तथा समाज के अंतिम व्यक्ति तक सहायता पहुंचाने के विचारों को केंद्र में रखते हुए आयोजित इन कार्यक्रमों में विद्यार्थियों के साथ-साथ गरीब एवं जरूरतमंद परिवारों की सहायता की गई। सेवा गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक जिम्मेदारी निभाने और जरूरतमंदों के जीवन में सहयोग का भाव मजबूत करने का संदेश दिया गया।

सांथीयर प्राथमिक स्कूल और अथी प्राथमिक स्कूल में आयोजित कार्यक्रमों में विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए आवश्यक सामग्री तथा स्कूल से जुड़ी सुविधाएं उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण सहयोग दिया

मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके ने स्वच्छ और हरित वातावरण के निर्माण का किया आह्वान,वडोदरा मंडल पर स्वच्छता पखवाड़ा की शुरुआत

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा ‘स्वच्छता पखवाड़ा–२०२६’ एवं ‘स्वच्छता ही सेवा’ अभियान के अंतर्गत वडोदरा रेलवे स्टेशन पर विशेष स्वच्छता एवं जनभागीदारी कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके सहित मंडल के सभी शाखा अधिकारी, रेलकर्मों, हाउसकीपिंग स्टाफ, भारत स्काउट्स एवं गाइड्स तथा सिविल डिफेंस के सदस्यों ने सक्रिय भागीदारी की। कार्यक्रम की शुरुआत में भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के नेतृत्व में स्वच्छता रैली निकाली गई। रैली के दौरान स्वच्छता संबंधी नारों के माध्यम से यात्रियों एवं आमजन को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया तथा रैली के मार्ग पर स्वच्छता अभियान भी चलाया गया। रैली के दौरान वडोदरा स्टेशन पर विशेष स्वच्छता एवं सफाई अभियान भी चलाया गया। अधिकारियों, रेलकर्मियों, भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, सिविल डिफेंस तथा हाउसकीपिंग स्टाफ ने साप्ताहिक रूप से विभिन्न क्षेत्रों में सफन सफाई कार्य किया। सफाई में लगे कर्मचारियों द्वारा आवश्यक कार्य ईकित, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण (PPE), मास्क एवं ग्लव्स का उपयोग किया गया। इसके पश्चात, स्वच्छता के प्रति जागरूकता का संदेश जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से सिविल डिफेंस द्वारा नुकड़ नाटक भी प्रस्तुत किया गया, जिसमें स्वच्छता बनाए रखने, कचरा न फैलाने, उचित अपशिष्ट निस्तारण तथा जनभागीदारी के महत्व को प्रभावी ढंग से



प्रदर्शित किया गया। वडोदरा स्टेशन के सैलून साइडिंग क्षेत्र में मंडल रेल प्रबंधक श्री राजू भडके द्वारा उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि इस अवसर पर पिछले १५ दिनों के दौरान वडोदरा मंडल द्वारा ‘स्वच्छता ही सेवा’ अभियान के अंतर्गत किए गए विभिन्न कार्यों एवं उपलब्धियों का संक्षिप्त विवरण भी प्रस्तुत किया गया। अभियान के दौरान २,६५० लोगों ने स्वच्छता की शपथ ली, जबकि SHG Portal पर १,३६८ CTUs की पहचान कर उन्हें बंद किया गया। लगभग ३२.१५ मीट्रिक टन कचरा एकत्रित कर उसका पृथक्करण (Segregation) किया गया। अभियान के अंतर्गत CTU Transformation, स्टेशन एवं कोच शौचालयों की सफाई, जनभागीदारी, प्लास्टिक मुक्त गतिविधियाँ, जल निकायों की सफाई, विउत्सत स्थलों की

है। इस तरह के प्रयासों से जरूरतमंद परिवारों को तत्काल राहत मिलने के साथ ही समाज में सहयोग और

संवेदनशीलता की भावना भी मजबूत होती है। अथी प्राथमिक स्कूल में भी विद्यार्थियों के लिए विशेष सेवा

दौर में विश्वेंद्र सिंह के कांग्रेस छोड़ने की ओटकलें तेज हुई थीं। उस समय डोटासरा ने कहा था कि उन्हें सिंह की ओर से कोई आधिकारिक पत्र नहीं मिला है और सोशल मीडिया की बातों के आधार पर वह कोई टिप्पणी नहीं करना चाहते। डोटासरा ने विश्वेंद्र सिंह को पार्टी का वरिष्ठ नेता बताते हुए कहा था कि उनके पास जब कोई लिखित शिकायत या आधिकारिक संवाद आएगा तो उस पर विचार किया जाएगा। उन्होंने यह भी कहा था कि सिंह के साथ लंबे समय से संगठनात्मक गतिविधियों को लेकर संवाद नहीं हो पाया है। इसके बाद घटनाक्रम तेजी से बदला। विश्वेंद्र सिंह ने कांग्रेस से अलग होने की घोषणा कर दी। उनके इस्तीफे के बाद राजस्थान कांग्रेस की अनुशासन समिति ने भी कार्रवाई शुरू कर दी और उन्हें कारण बताओ नोटिस जारी किया। नॉटिस

में कथित अनुशासनहीनता, पार्टी विरोधी गतिविधियों और प्रदेश नेतृत्व के खिलाफ सार्वजनिक बयानों को आधार बनाया गया तथा सात दिन के भीतर जवाब मांगा गया। समिति ने पूछा कि उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई, जिसमें पार्टी की प्राथमिक सदस्यता समाप्त करना भी शामिल हो सकता है, क्यों नहीं की जानी चाहिए। विश्वेंद्र सिंह ने नोटिस पर सोशल मीडिया के जरिए प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि पार्टी उनके खिलाफ कार्रवाई करने के लिए स्वतंत्र है, लेकिन वह भी अपने राजनीतिक भविष्य को लेकर निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र हैं। उनके इस रुख से साफ है कि डोटासरा और सिंह के बीच चल रहा विवाद अब केवल स्थानीय निकाय चुनावों के प्रदर्शन या टिकट वितरण तक सीमित नहीं रहा है, बल्कि संगठन और नेतृत्व को

लेकर गंभीर मतभेद में बदल चुका है। भरतपुर और डींग के निकाय चुनाव इस पूरे विवाद की पृष्ठभूमि में महत्वपूर्ण रहे हैं। हाल में हुए राजस्थान के शहरी स्थानीय निकाय चुनावों में भाजपा ने फिर निकायों में बोट बनाने में सफलता हासिल की। रिपोर्टों के अनुसार, कई स्थानों पर निर्दलीय पार्षदों के समर्थन से भाजपा ने अध्यक्ष और मेयर पद हासिल किए। भरतपुर क्षेत्र में भी कांग्रेस के भीतर चुनावी रणनीति और टिकट वितरण को लेकर मतभेद सामने आए। इसी चुनावी परिणाम के बाद विश्वेंद्र सिंह ने प्रदेश नेतृत्व की भूमिका पर सवाल उठाए। विश्वेंद्र सिंह राजस्थान की राजनीति में लंबे समय से सक्रिय रहे हैं और भरतपुर क्षेत्र में उनका राजनीतिक प्रभाव रहा है। वह लोकसभा और विधानसभा दोनों सदनों के सदस्य रह चुके हैं तथा अशोक गहलोत के

नेतृत्व वाली सरकार में मंत्री भी रहे। वर्ष २०२० में सचिन पायलट के नेतृत्व में हुए राजनीतिक संकट के दौरान वह पायलट समर्थक विधायकों के साथ मानेसर गए थे और बाद में गहलोत सरकार में फिर मंत्री बने। उनकी राजनीतिक यात्रा में कांग्रेस के अलावा अन्य दलों से जुड़ाव भी रहा है, लेकिन लंबे समय तक भरतपुर की राजनीति में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वर्तमान विवाद में अशोक गहलोत खेमे का संदर्भ भी राजनीतिक चर्चाओं में आ रहा है, हालांकि विश्वेंद्र सिंह के मौजूदा कदम को सीधे किसी दूसरे नेता के निंदेश या रणनीति से जोड़ने का कोई पुट आधार सामने नहीं आया है। विवाद का तत्काल कारण भरतपुर और डींग में निकाय चुनावों के बाद संगठन, टिकट वितरण और प्रदेश नेतृत्व को लेकर सामने आया असंतोष है।

काकाмиगाहारा। भारतीय महिला हॉकी टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए एशियाई खेलों में ४४ साल बाद स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रच दिया। लालेरूमियामी के निर्णायक गोल और अनुभवी गोलकीपर सविता पूनिया की शानदार बचाव क्षमता के दम पर भारत ने शुक्रवार को फाइनल मुकाबले में गत चैंपियन चीन को १-० से शिकस्त दी। इस जीत के साथ भारतीय महिला हॉकी टीम ने न केवल एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक अपने नाम किया, बल्कि २०२८ लॉस एंजेलिस ओलंपिक के लिए भी सीधे क्वालिफाई कर लिया। भारतीय महिला हॉकी के लिए यह उपलब्धि इसलिए भी खास है, क्योंकि टीम ने इससे पहले वर्ष १९८२ में नई दिल्ली में हुए एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक हासिल किया था। इसके बाद लंबे अंतराल के बाद भारतीय बेटियों ने महाद्वीपीय खेलों में फिर से शीर्ष स्थान हासिल किया है। फाइनल मुकाबले में दोनों टीमों के बीच कड़ा संघर्ष देखने को मिला। चीन अपने घरेलू दर्शकों के सामने खिताब बचाने के इरादे से मैदान पर उतरा था, जबकि भारतीय टीम की नजर स्वर्ण पदक के साथ ओलंपिक टिकट हासिल करने पर थी। अन्य अद्यतन जानकारी के लिए यात्रीगण कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन करें।



दिया। मेजबान टीम ने भारतीय सर्फिल में लगातार प्रवेश करने की कोशिश की और कई मौकों पर भारतीय रक्षापंक्ति पर दबाव बनाया। हालांकि भारतीय डिफेंस ने पूरे मुकाबले में शानदार संरम का परिचय दिया। खिलाड़ियों ने चीन के लगातार हमलों के बावजूद अपनी संरचना को बिखरने नहीं दिया और हर हमले का मजबूती से सामना किया। भारत की रक्षापंक्ति के सामने चीन की फॉरवर्ड लाइन कई बार पहुंची, लेकिन निर्णायक क्षणों में भारतीय खिलाड़ियों ने गोल होने से रोक दिया। मुकाबले में गोलकीपर सविता पूनिया की बराबरी का सबसे बड़ा मौका उस समय रिवर्स स्टिक से ऐसा सटीक शॉट लगाया, जो चीनी गोलकीपर को पहुंच से बाहर होते हुए गोल के ऊपरी हिस्से में जा पहुंचा। गेंद के गोल में जाते ही भारतीय खिलाड़ियों ने खुशी मनाई और टीम को शुरुआती बढ़त मिल गई। चीन के गोलकीपर को शॉट पर प्रतिक्रिया देने का पर्याप्त समय तक नहीं मंच की शुरुआत से ही दोनों टीमों ने एक-दूसरे पर दबाव बनाने की कोशिश की, लेकिन भारतीय खिलाड़ियों ने शक़ात्मक रणनीति

के साथ-साथ जबाबी हमलों के जरिए चीन पर दबाव बनाए रखने की कोशिश की। मैच आगे बढ़ने के साथ चीन ने लगातार बराबरी का गोल तलाशने का प्रयास किया। चीनी खिलाड़ियों ने गेंद पर कब्जा बनाए रखते हुए भारतीय सर्फिल के आसपास कई हमले किए, लेकिन भारतीय टीम ने हर बार उन्हें गोल करने से रोक दिया। भारतीय डिफेंस ने न केवल गेंद को बाहर निकाला, बल्कि चीन के हमलों को अंतिम चरण तक पहुंचने से भी रोकने का प्रयास किया। दूसरी ओर भारतीय खिलाड़ी अवसर मिलने पर तेज काउंटर अटैक के जरिए चीन की रक्षापंक्ति को चुनौती देती रही। फाइनल के अंतिम क्षणों में चीन का दबाव और बढ़ गया था। एक गोल से पीछे चल रही गत चैंपियन टीम बराबरी के लिए पूरी ताकत लगा रही थी। भारतीय खिलाड़ियों के लिए उस समय सबसे बड़ी चुनौती अपनी बढ़त को सुरक्षित रखना था। टीम ने दबाव के बावजूद धैर्य नहीं खोया। खिलाड़ियों ने एक-दूसरे का साथ देते हुए रक्षापंक्ति को मजबूत बनाए रखा और चीन को गोल करने का कोई अवसर नहीं दिया। अंतिम सीटी बजते ही भारतीय खिलाड़ियों की मेहनत रंग लाई और १-० की बढ़त स्वर्ण पदक में बदल गई। भारतीय महिला हॉकी टीम की इस

उपलब्धि का महत्व केवल एक स्वर्ण पदक तक सीमित नहीं है। ४४ वर्षों के लंबे इंतजार के बाद एशियाई खेलों में शीर्ष स्थान हासिल करना टीम के लिए एक महत्वपूर्ण पड़ाव है। वर्ष १९८२ में नई दिल्ली में स्वर्ण पदक जीतने के बाद भारतीय महिला हॉकी को दोबारा एशियाई खेलों में स्वर्ण हासिल करने के लिए लंबा इंतजार करना पड़ा। अब चीन की धरती पर चीन को ही फाइनल में हराकर स्वर्ण पदक जीतना टीम के लिए विशेष उपलब्धि बन गया है। इस जीत ने भारतीय महिला हॉकी के लिए २०२८ लॉस एंजेलिस ओलंपिक का रास्ता भी साफ कर दिया है। एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय टीम ने ओलंपिक के लिए सीधे क्वालिफिकेशन हासिल कर लिया। ऐसे में इस जीत से टीम को आगे की तैयारी के लिए अतिरिक्त आत्मविश्वास मिलेगा। भारतीय महिला हॉकी के लिए यह उपलब्धि उस निरंतर मेहनत का परिणाम है, जिसमें खिलाड़ियों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को लगातार मजबूत किया है। लालेरूमियामी के लिए यह मुकाबला व्यक्तिगत रूप से भी यादगार बन गया। अपने २००वें अंतरराष्ट्रीय मैच में निर्णायक गोल करके उन्होंने टीम को स्वर्ण पदक

दिलाने में अहम भूमिका निभाई। वहीं सविता पूनिया ने गोलकीपर के रूप में अपने अनुभूय का परिचय देते हुए महत्वपूर्ण मौकों पर टीम को संभाला। विशेष रूप से पेनाल्टी स्ट्रोक बचाने का उनका प्रयास फाइनल के निर्णायक क्षणों में से एक रहा। भारतीय महिला हॉकी टीम ने इस जीत के साथ यह भी दिखाया कि दबाव भरे मुकाबलों में संयम और अनुशासन कितना महत्वपूर्ण होता है। चीन जैसी मजबूत टीम के खिलाफ पूरे मैच में एक गोल की बढ़त बनाए रखना आसान नहीं था, लेकिन भारतीय खिलाड़ियों ने अंतिम क्षण तक अपनी एकाग्रता कायम रखी। आक्रमण में लालेरूमियामी का गोल और गोलकीपिंग में सविता का शानदार प्रदर्शन इस ऐतिहासिक जीत के प्रमुख खिलौने हैं। ४४ साल बाद एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली भारतीय महिला हॉकी टीम की यह सफलता आने वाले वर्षों के लिए भी महत्वपूर्ण मानी जाएगी। स्वर्ण पदक के साथ ओलंपिक का टिकट हासिल करने वाली भारतीय बेटियों ने अंतरराष्ट्रीय हॉकी के मंच पर अपनी मजबूत मौजूदगी दर्ज कराई है। चीन को उसके ही मैदान पर हराकर हासिल की गई यह जीत भारतीय महिला हॉकी के इतिहास में लंबे समय तक याद की जाएगी।



है। इस तरह के प्रयासों से जरूरतमंद परिवारों को तत्काल राहत मिलने के साथ ही समाज में सहयोग और

संवेदनशीलता की भावना भी मजबूत होती है। अथी प्राथमिक स्कूल में भी विद्यार्थियों के लिए विशेष सेवा

कार्यक्रम आयोजित किया गया। यहां बच्चों को नोटबुक, पेन, पेंसिल और खर सहित आवश्यक शैक्षणिक

जान कल्याण ट्रस्ट के अध्यक्ष एवं किसान तथा सहकारी क्षेत्र से जुड़े

वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला से जबरन मजदूरी हटाने को भारत प्रतिबद्ध : पीयूष गोयल

मिलवाँकी। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में जबरन मजदूरी व्यवस्था को समाप्त करने के प्रति भारत की प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि देश ऐसी व्यापारिक व्यवस्था के पक्ष में है, जिसमें श्रमिकों के अधिकारों और गरिमा का सम्मान सुनिश्चित हो। अमेरिका के विस्कोन्सिन स्थित मिलवाँकी में आयोजित जी-२० व्यापार मंत्रियों की बैठक में भारत का पक्ष रखते हुए गोयल ने वैश्विक व्यापार, विनिर्माण क्षमता और निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर भारत की प्राथमिकताओं को सामने रखा। गोयल ने कहा कि भारत की विनिर्माण क्षमता को केवल घरेलू बाजार तक सीमित करके नहीं देखे जा सकता। देश में १४० करोड़ लोगों की विशाल घरेलू मांग है और इसके साथ ही भारतीय उद्योग वैश्विक बाजार की क्षमता को पूरा करने की क्षमता भी विकसित कर रहा है। उन्होंने कहा कि भारत का विनिर्माण क्षेत्र वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं का हिस्सा बनने की दिशा में लगातार आगे बढ़ रहा है और उत्पादन क्षमता का विस्तार व्यापक आर्थिक गतिविधियों तथा बाजार की वास्तविक जरूरतों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है। जी-२० व्यापार मंत्रियों की बैठक में वैश्विक व्यापार व्यवस्था से जुड़े कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा हुई। बैठक के दौरान श्रम अधिकारों, आपूर्ति श्रृंखला देशों की औद्योगिक नीतियों से जुड़े मुद्दे प्रमुख रहे। इसी क्रम में भारत ने जबरन मजदूरी को लेकर अपना रुख स्पष्ट किया। गोयल ने कहा कि वैश्विक आपूर्ति

श्रृंखलाओं में किसी भी स्तर पर जबरन मजदूरी जैसी व्यवस्था के लिए जगह नहीं होती चाहिए। भारत इसके उन्मूलन के लिए अपनी प्रतिबद्धता पहले भी व्यक्त करता रहा है और वैश्विक मंचों पर भी इस विषय को महत्व देता है। विनिर्माण क्षेत्र की क्षमता पर भारत का पक्ष रखते हुए गोयल ने कहा कि जी-२० अण्वक्षता की ओर से जिन क्षेत्रों की पहचान की गई है, उनमें किसी भी संरचनात्मक रूप से अतिरिक्त विनिर्माण क्षमता नहीं है। उनका यह बयान ऐसे समय में आया है, जब वैश्विक व्यापार में उत्पादन और आपूर्ति श्रृंखलाओं को लेकर देशों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। विनिर्माण देश अपनी औद्योगिक क्षमता को मजबूत करने और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। भारत भी विनिर्माण क्षेत्र को बढ़ावा देने और वैश्विक बाजारों के साथ अपनी भागीदारी मजबूत करने पर जोर देता रहा है। बैठक में व्यापार को प्रभावित करने वाले अनुचित समर्थन और डॉपिंग से जुड़ी चिंताओं पर भी भारत ने अपना पक्ष रखा। गोयल ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय व्यापार में निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा बनाए रखना आवश्यक है और यदि किसी देश की व्यापारिक गतिविधियों से दूसरे देश के उद्योगों को अनुचित नुकसान पहुंचता है तो उससे निपटने के लिए विश्व व्यापार संगठन के नियमों के अनुरूप उपाय किए जा सकते हैं। उन्होंने साक्ष्य आधारित एंटी-डॉपिंग और काउंटरवेलिंग शुल्क जैसे उपायों का उल्लेख करते हुए कहा कि व्यापार संबंधी विवादों और अनुचित व्यापारिक गतिविधियों से निपटने के लिए नियम आधारित व्यवस्था

महत्वपूर्ण है। एंटी-डॉपिंग शुल्क का इस्तेमाल सामान्य तौर पर तब किया जाता है, जब किसी देश से आने वाले उत्पादों की कीमत उनके सामान्य बाजार मूल्य से कम पाई जाती है और इससे आयात करने वाले देश के घरेलू उद्योग को नुकसान पहुंचने की स्थिति बनती है। वहीं काउंटरवेलिंग शुल्क का उद्देश्य ऐसे मामलों में घरेलू उद्योग को संरक्षण देना है, जहां किसी दूसरे देश में दिए गए अनुचित सरकारी समर्थन या सब्सिडी के कारण आयातित वस्तुओं को प्रतिस्पर्धात्मक लाभ मिलता है। भारत ने इन उपायों को विश्व व्यापार संगठन के नियमों और उपलब्ध साक्ष्यों के अनुरूप लागू किए जाने की आवश्यकता पर जोर दिया। गोयल ने जी-२० के भीतर भविष्य की प्राथमिकताओं को लेकर भी भारत की स्थिति स्पष्ट की। उन्होंने वर्ष २०२७ में जी-२० की अध्यक्षता संभालने वाले यूनाइटेड किंगडम को भारत की ओर से पूर्ण समर्थन देने की बात कही। भारत ने कहा कि वह जी-२० की प्रक्रिया को मजबूत करने और वैश्विक आर्थिक तथा व्यापारिक मुद्दों पर सहयोग बढ़ाने के लिए सदस्य देशों के साथ मिलकर काम करेगा। जी-२० दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं का महत्वपूर्ण मंच है, जहां वैश्विक अर्थव्यवस्था, व्यापार, निवेश और विकास से जुड़े मुद्दों पर विचार-विमर्श किया जाता है। मिलवाँकी में बैठक के दौरान गोयल ने कई देशों के व्यापार मंत्रियों के साथ द्विपक्षीय वार्ताएं भी की। उन्होंने ऑस्ट्रेलिया, सऊदी अरब, फ्रांस, दक्षिण कोरिया और कनाडा के व्यापार मंत्रियों के

साथ अलग-अलग मुलाकात कर व्यापार और आर्थिक सहयोग से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की। इन बैठकों में द्विपक्षीय व्यापार संबंधों को आगे बढ़ाने, आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत करने और व्यापारिक सहयोग के नए अवसर तलाशने जैसे विषयों पर विचार-विमर्श हुआ। भारत लगातार वैश्विक व्यापार व्यवस्था में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने की दिशा में काम कर रहा है। एक ओर देश अपने विशाल घरेलू बाजार की जरूरतों को पूरा करने के लिए उत्पादन क्षमता बढ़ाने पर जोर दे रहा है, वहीं दूसरी ओर भारतीय उत्पादों की वैश्विक बाजारों तक पहुंच बढ़ाने के प्रयास भी जारी हैं। ऐसे में वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में श्रम मानकों, निष्पक्ष प्रतस्पर्धा और व्यापार नियमों का पालन भारत के लिए महत्वपूर्ण विषय बनते जा रहे हैं। गोयल ने जी-२० मंच पर भारत का पक्ष रखते हुए यह भी संकेत दिया कि देश वैश्विक व्यापार में अवसरों के साथ-साथ निम्न आधारित व्यवस्था को भी महत्व देता है। भारत का जोर ऐसी व्यापार व्यवस्था पर है, जिसमें देशों के बीच प्रतिस्पर्धा निष्पक्ष हो, श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा हो और व्यापारिक उपाय अंतरराष्ट्रीय नियमों के अनुरूप हों।मिलवाँकी बैठक में भारत द्वारा जबरन मजदूरी के खिलाफ प्रतिबद्धता दोहराना इसी व्यापक दृष्टिकोण का हिस्सा रहा। साथ ही एंटी-डॉपिंग और काउंटरवेलिंग उपायों को लेकर भारत के रुख ने यह स्पष्ट किया कि देश अपने उद्योगों के हितों की रक्षा के लिए विश्व व्यापार संगठन के नियमों के तहत उपलब्ध उपायों का इस्तेमाल करने के पक्ष में है।